Impact Factor – 3.452 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December - 2017

SPECIAL ISSUE-XXI

भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
भाषा, साहित्य और अनुवाद
Language, Literature and Translation

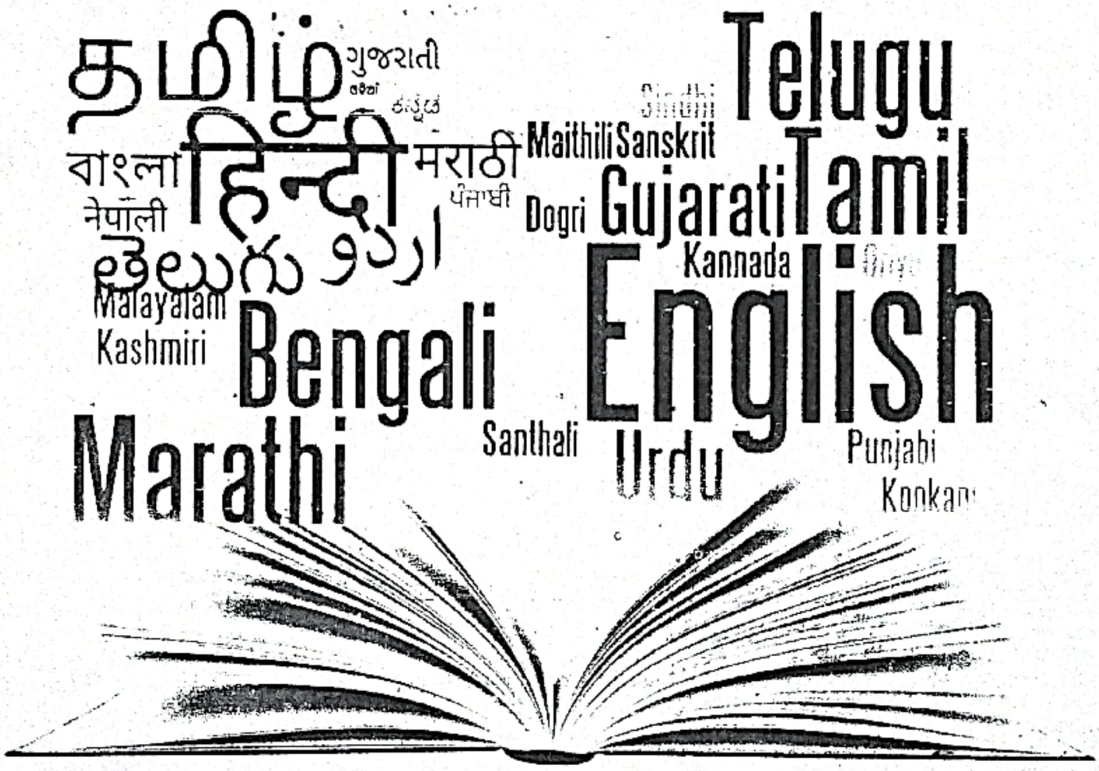

अतिथी संपादक :
डॉ. भाऊसाहेब गमे
प्राचार्य,
महात्मा गांधी विद्यामंदिरचे कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
येवला, जि. नाशिक (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक :
डॉ. धनराज धनगर
सहा. प्राध्यापक,
महात्मा गांधी विद्यामंदिरचे कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
येवला, जि. नाशिक (महाराष्ट्र)

सहयोगी संपादक : **प्रा. रघुनाथ वाकळे** (हिंदी विभाग), **प्रा. कमलाकर गायकवाड** (इंग्रजी विभाग)

This Journal Is Indexed In :
- UGC Approved Journal List No. 40705 & 44117
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services ("IFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue 21 : भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
December 2017

अनुक्रमणिका

अ. नं.	शोध निबंधाचे शीर्षक	लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
	मराठी विभाग		
१	भाषा, साहित्य आणि अनुवाद यांचा सहसंबंध	डॉ. पृथ्वीराज तौर	०६
२	भाषांतर : स्वरुप आणि व्याप्ती	डॉ. भाऊसाहेब गमे	२०
३	अनुवाद संज्ञा-संकल्पना	डॉ. अरुण पाटील	२४
४	अनुवादित साहित्य : संकल्पना व स्वरूप	डॉ. सागर लटके	२७
५	अनुवाद प्रक्रिया : स्वरूप	डॉ. शिवप्रसाद वायाळ	३३
६	अनुवाद प्रक्रिया व पद्धती	डॉ. सुभाष आहेर	३५
७	अनुवादाचे प्रकार आणि मराठी साहित्य	डॉ. उज्ज्वला देवरे, सुनील खैरनार	३९
८	अनुवाद प्रक्रिया आणि सृजनशीलता	डॉ. प्रमोद आंबेकर	४२
९	भाषांतर आणि अनुवाद	डॉ. किरण पिंगळे	४७
१०	लोकसमुहाकडून पौराणिक विषयावर अनुवादित झालेली मथुरा लभान बोलीतील लोकगीते	डॉ. भगवान साबळे	५२
११	ख्रिस्तपुराण : रूपांतर, लिप्यंतर, प्रकारांतर व भाषांतर	प्रा. विनय मडगावकर	५७
१२	अनुवादाचे सांस्कृतिक महत्त्व	प्रा. माधवी पवार	६३
१३	अनुवाद : संकल्पना व महत्त्व	डॉ. गीतांजली चिने	६७
१४	काव्यानुवाद 'जगतांब्रा' : साहित्य, भाषा व अनुवाद	प्रा. नव्हसो परब	६९
१५	भारतीय कवितांचे मराठी अनुवाद	डॉ. विद्या सुर्वे-बोरसे	७२
१६	अन्य भाषांमधून मराठी भाषेत अनुवादित झालेले ग्रंथ : एक आकलन	डॉ. स्नेहल मराठे	७५
१७	एक अजरामर अनुवाद – 'एक होता कार्व्हर'	डॉ. शीला गाढे	७८
१८	प्रसारमाध्यमे आणि इतर क्षेत्रातील अनुवाद संधी	डॉ. प्रकाश शेवाळे	८१
	हिंदी विभाग		
१९	अनुवाद साहित्य का स्वरूप एवं संकल्पना	डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	८७
२०	अनुवाद : स्वरूप, आवश्यकता एवं समस्या	डॉ.अनिता नेरे, डॉ.योगिता हिरे	९१
२१	अनुवाद : स्वरूप और विवेचन	के. के. बच्छाव	९४
२२	अनुवाद साहित्य कि व्याप्ती और प्रासंगिक महत्त्व	डॉ. डी. बी. महाजन	९७
२३	अनुवाद एवं प्रयोजनमुलक हिंदी	डॉ. गजानन वानखेडे	९९
२४	अनुवाद : स्वरूप, महत्त्व एवं उपयोगिता	डॉ. सुनिता कावळे	१०३
२५	अनुवाद साहित्य : स्वरूप, संकल्पना एवं आवश्यकता	प्रा. रविंद्र ठाकरे	१०६

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) - 0.676 (2013)
Special Issue 21 : भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
December 2017

अनुवाद : स्वरूप और विवेचन

प्रा.के.के.बच्छाव
हिंदी विभाग,
श्रीमती पुष्पाताई हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मालेगाव कॅम्प,
मो. ९४२१६०७८०३

अनुवाद भाषाओंके बीच संप्रेषण की वह प्रक्रीया है । जिसके लिए अँग्रेजी में ट्रांसलेशन अरबी मे तर्जुमा आदि शब्द प्रयोग किये जाते है। ट्रांसलेशन शब्द लॅटिन के ट्रांस और लेशन के संयोग से बना है। जिसका अर्थ है पार ले जाना। हिंदी, मराठी आदि भाषाओं में अनुवाद शब्द प्रचलित है। अनुवाद शब्द का संबंध वद् धातूसे है। जिसका अर्थ है, बोलना या कहना अनुवाद का मुल अर्थ है, पुनःकथन या किसी के कहने के बाद कहना। हिंदी में अनुवाद शब्द की उपलब्धि संस्कृत भाषासे मानी जाती है।

संसार की अधिकत्तर विकसित भाषाओं में अनुवाद की सुदीर्घ परंपरा लक्षित होती है। साहित्य ज्ञान, विज्ञान का प्रचार क्षेत्र अनुवाद से ही विकसित हुआ है। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक तकनीकी आदि क्षेत्र मे अनुवाद दो भिन्न भाषिक व्यक्तियोंको भावनिक एवं वैचारिक रूप से जोडने का काम कर रहा है। प्रादेशिक भाषाओं में चित्रित अनेक प्रवाहों एवं सीमाएँ कम कर उस प्रादेशिक भाषाके साहित्य को राष्ट्रीय और अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक रूप में जोडने का काम अनुवाद करता है।

बीसवी शतीसे अनुवाद विधा का महत्व साहित्य के साथ अन्य क्षेत्रों में भी अनुभव होने लगा। सूचना और तकनीकी के अनेक नये संसाधनो से 'वसुधैव-कुटुंब-कम' की भावना बढने लगी। विश्व एक परीवार के रूप में परिवर्तित हुआ जहाँ विभिन्न भाषा भाषि ओं का आपसी मेल एवं संपर्क के कारण प्रत्यक्ष -अप्रत्यक्ष संवादो के कारण, विचारों का आदान-प्रदान होने लगा तब संस्कृति, विचार रीतिरिवाज, धर्म, राजनिती, परिवार ज्ञान -विज्ञान विषयों को लेकर एक जिज्ञासा का भाव जागृत होने लगता है। तब उनकी भाषा एवं साहित्य में चित्रित उन विषयों के लेखन से परिचित होने के लिए अनुवाद विज्ञान की आवश्यकता होती है। उसीसे अनुवाद विज्ञान विकसित हुआ।'

वर्षो पहले अनुवाद हमारे धार्मिक ग्रंथोसे प्रारंभ हुआ ऐसा माना जाता है। अनुवाद आज व्यक्ती की सामाजिक आवश्यकता बन गया है। आज छोटे से बडे सभी समाज प्रदेश, राष्ट्र एक दुसरे से संपर्क स्थापित करना चाहते है। ज्ञान-विज्ञान के साथ अनेक आंतरराष्ट्रीय प्रश्नोपर विचार विनिमय करना चाहते है । तब उनसे परिचित होने के लिए अनवाद की बहूत आवश्यकता होती है।

भारत जैसे बहूभाषी देश मे तो विभिन्न प्रदेशो की साहित्य संस्कृति एवं जीवन पद्धती से परिचित होने के लिए विभिन्न प्रदेशोकी एकता के लिए तथा सरकारी योजनाओ एवं जानकारी उस प्रदेश के लोगों तक पहूँचाने के लिए अनुवाद महत्वपूर्ण होता है। अनुवाद से ही दो विभिन्न भाषिक व्यक्ति, एक दुसरे से जुडते है।

अनुवाद के प्रमुखतः दो भेद होते है। जहाँ विधी का अनुवाद हो वहाँ शब्दानुवाद। और जहाँ विहीत का हो वहाँ अर्थानुवाद होता है। हिंदी के श्रेष्ठ भाषा विद्वज डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते है

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2348-7143
December 2017

अनुवाद का मुल उद्देश है स्त्रोत भाषा की रचना के भाव या विचार लक्ष्य भाषा में यथा संभव अपने मुल रूप मे लाना वे आगे कहते है की अनुवाद में स्त्रोत भाषा एव लक्ष्य भाषा दो होती है। सामान्यतः अनुवादक स्त्रोत भाषा से अधिक प्रभावित होता जाता है। तब अनुवाद मे स्त्रोत भाषा के भाव एवं प्राकृतिक सुंदरता होती है। किंतु आवश्यकता यह होती है की, स्त्रोत भाषा के भाव सौंदर्य और अर्थ लक्ष्य भाषा में भी चित्रित होने चाहिए।

अनुवाद मे मौलिक रचना जैसी स्वाभाविकता होनी चाहिए। इसलिए शब्द चयन एवं भावोंपर भी अनुवादक को ध्यान देना चाहिए । किसी भी साहित्य की मौलिक रचना के भाव एवं अर्थ को पाठक शीघ्रता से को ग्रहण करता है उसके साथ एकरूप होता है। इसका कारण मौलिक रचना की भाषा और पाठक की भाषा एक होती है। यही भाव अनुवादित रचना में रहा तो उस रचना से उस भाषा का लेखक पाठक के मन में प्रवेश कर सकता है। संक्षेप मे कह सकते है की एक भाषा में व्यक्त भावों को दुसरी भाषा में इस तरह व्यक्त होना चाहिए कि उसका स्वरूप न परीवर्तित हो न उनका मुल सौंदर्य नष्ट हो। अनुवाद प्रामाणिक हो और मुल भावों को व्यक्त कर सके। अनुवाद मे सुबोधता, अर्थात सरलात हो। अलंकार, छंद, रस, शास्त्र के अनावश्यक बोज में अनुवाद का प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट न हो। अनुवाद यथा संभव मौलिक रचना के निकट हो।

सूचना एवं तकनीकी के युग मे अनुवाद का क्षेत्र एवं महत्व प्रतिदिन बढ रहा है। सामाजिक क्षेत्र में व्यवसाय, नौकरी, पर्यटन तथा सरकारी कार्यालयों एवं सार्वजनिक स्थलोपर विभिन्न भाषा-भाषी मिलते है तो संवादोद्वारा एक-दुसरे की भाषा से परिचित होते है। संचार न्यायालय, कार्यालय विज्ञान, शिक्षा एवं साहित्य जैसे प्रमुख क्षेत्रों मे अनुवाद का महत्व प्रतिदिन बढ़ता हुआ दिखाई देता है। इनमें न्यायालय, कार्यालय, विज्ञान के क्षेत्र में अधिकतर अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होता है। किन्तु सामान्य व्यक्ति उस भाषा से और काम से अपरिचित होता है। तब उसकी जरूरत के अनुसार उस क्षेत्र के कामकाज का हिंदी एवं अन्य भाषा में अनुवाद करने की सुविधा उपलब्ध कर दी जाती है। अनुवाद से ही वह उस काम काज से तथा उस क्षेत्र के ज्ञान से परिचित होता है। आंतरराष्ट्रीय स्तरपर तो अनुवाद का महत्व एवं आवश्यकता प्रतिदिन बढ रही है। आतंकवाद, व्यापार, पर्यावरण सुरक्षा जैसे अनेक महत्वपूर्ण विषयोंपर अनेक देश आपसी विचार विनिमय के लिए एक दुसरे देश की भाषा का ज्ञान प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अनुवाद से प्राप्त करते है।

अनुवाद कार्य में अनुवादक का स्थान महत्वपूर्ण होता है। वैचारिक आदान-प्रदान तथा एकात्मता की भावना की वृद्धि के लिए अनुवादक का स्थान महत्त्वपुर्ण होता है, विगत कुछ वर्षों मे प्रमुखतः साहित्यिक कृतीओ को ही अनुवाद के लिए अधिक चुना गया सारा संसार विश्वप्रसिद्ध रचनाओं, कृतीओं, के अनुवाद के माध्यम से एक दुसरे से परिचित एवं लाभान्वित होता आया है। अनुवाद के द्वारा ही प्रांतिय, क्षेत्रीय भाषा के साहित्य को राष्ट्रीय एवं विश्व स्तरपर प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। आज भारतीय किसान नारी, दलित, आदिवासी आदि वर्ग के जीवन संघर्ष की कहानी अनुवाद के कारण दुसरे प्रांत या राष्ट्रीय स्तर पर उसकी वेदना एवं पीडाको अनुभव किया जा सकता है। जिससे समाज के विद्वज वर्ग मे इन पीडित वर्ग के प्रति एक अपनत्व की भावना निर्माण होती है।

आज शिक्षा, पत्र-कारिता व्यवसाय आकाशवाणी, सुचना और प्राद्योगिकी, इनटरनेट आदी क्षेत्र में अनुवाद का स्थान अनिवार्य बनता जा रहा है। इसके लिए एक अच्छे अनुवादक को भाषा, विषय, विधा का ज्ञान अनिवार्य है। अनुवादक को स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनो भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है। दुभार्ग्य

से दोनो में से किसी एक भाषा का ज्ञान अनुवादक को कम होगा तो अनुवाद में त्रुटि रहने की संभावना हो सकती है। अनुवादक को मुल रचना के भावों से जुडना चाहिए तभी वह भाव अनुवाद रचनामें आ सकते है। मुल रचना में कोई त्रुटी या कमी है तो अनुवादक को उसे समझ लेना चाहिए। किसी भी स्थिती मे मुल रचना का कोई अंश छोड देने का अधिकार अनुवादक को नही है। मुल के साथ निष्ठावान रहकर ही अनुवादक करना अनुवाद का कर्तव्य है। अनुवादक को मुल रचना और रचनाकार के प्रति आस्था एवं श्रद्धा का भाव होना चाहिए। जिसका परिणाम एक सुंदर अनुवाद कृती का निर्माण होने मे होगा। इसलिए अनुवाद को निरंतर अध्ययनशिल होना चाहिए।

अनुवादक अगर साहित्यिक पृष्ठभूमि का रहा तो अनुवाद कार्य अधिक सफल हो सकता है। साहित्यिक रूचिवाला व्यक्ति, साहित्यिक गति-विधियों एवं भाषा अलंकार, छंद, रस आदि अंगो से परिचित होता है। इसलिए अनुवाद भी उचित दिशा में हो सकेगा। किसी भी साहित्य कृती रचना का, अनुवाद पढते समय पाठक के मन में मुल रचना के प्रति आत्मियता का भाव निर्माण होना चाहिए ।

संक्षेप में कह सकते है की, अनुवाद का महत्व एवं उसका क्षेत्र प्रतिदिन बढ रहा है विश्व एक परिवार बंनता जा रहा है। उसमे अनुवाद का स्थान आनेवाले काल में महत्वपूर्ण रहेगा इसमें कोई संदेह नही। लेकिन सवोत्तम, अनुवाद के आनंद के लिए सृजनात्मक प्रतिभा बहूत आवश्यक है।